वाल्मीकि रामायण की उपादेयता

डॉ0 शिल्पी श्रीवास्तव

वाल्मीकि रामायण संस्कृत साहित्य का आदिकाव्य माना जाता है। संस्कृत का कोई भी महाकवि नहीं है जिस पर किसी न किसी रूप में रामायण का प्रभाव न हो। कालिदास का रघुवंश प्रत्यक्ष रूप से तथा मेघदूत अप्रत्यक्ष रूप से रामायण से प्रेरित है। भास के प्रतिमा और अभिषेक, मुरारि का अनर्घराघव, दिङ्नाग की कुन्दमाला, भवभूति के महावीरचरित तथा उत्तररामचरित, शक्तिभद्र का आश्चर्यचूड़ामणि, राजशेखर का बालरामायण, विरूपाक्ष का उन्मत्त राघव, वामनभट्ट का रघुनाथ चरित, जयदेव का प्रसन्नराघव, राजचूड़ामणि दीक्षित का आनन्दराघव आदि नाटक रामायण की उपजीव्यता धारण करते हैं। महाकवि प्रवरसेन का प्राकृत भाषा में लिखा गया महाकाव्य सेतुबन्ध, कुमारदास का महाकाव्य जानकीहरण, भट्टि का महाकाव्य आदि अनेक महत्वपूर्ण महाकाव्य या नाटक रामायण से प्रेरित है।

वाल्मीकि रामायण प्रथम उपलब्ध रामायण है। आगे चलकर इससे प्रेरित होकर संस्.त, प्रा.त तथा अन्य भारतीय भाषाओं में अनेक रामायणों की रचना हुई। योगवशिष्ठ, आध्यात्मरामायण, मंत्ररामायण, भुशुंडिरामायण आदि रामायण काव्य वाल्मीकि रामायण की प्रत्यक्ष परम्परा में ही है। जैन परम्परा में विमलसूरि का पउमचरिउ (प्राकृत में) तथा रविषेण का पद्मचरित भी रामायण काव्य है।